नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आखिर क्यों हो रही हैं नृशंस हत्याएं?

एक के बाद दूसरी ऐसी वारदात सामने आ रही है कि या तो पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर पति की जघन्य हत्या की. या पति ने प्रेमिका के साथ मिलकर पत्नी को मारा. इस तरह की खबरें भी आए दिन पढ़ने को मिलती हैं कि खाना अच्छा नहीं बना इसलिए पति ने पत्नी को इतनी जोर से मारा कि उसकी मृत्यु हो गई .जाहिर है बढ़ते भौतिकवाद और पैसा कमाने की अंधी होड़ ने आम आदमी के जीवन को तनाव से भर दिया है. इसी तनाव और हताशा में वो हिंसक होते जा रहा है.

समाज शास्त्रियों और गैर सामाजिक संगठनों ने इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए. दरअसल कुटुंब व्यवस्था के बिगड़ने से बच्चे को परिवार का दुलार नहीं मिल पाता. ऐसे में बच्चा या तो आया के भरोसे या दिनभर घर में माता-पिता की राह देखकर एकाकी तौर पर पलता है. बड़ा होकर यही बच्चा थोड़ा सा भी तनाव नहीं झेल पाता और हिंसक हो जाता है. हाल में ऐसी कई घटनाएं प्रकाश में आई हैं. मेरठ की मुस्कान ने अपने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर अपने पति सौरभ राजपूत की हत्या कर दी. ऐसे ही मुजफ्फरनगर की पिंकी ने अपने आशिक के लिए अपने पति अनुज को जहर पिलाकर मार दिया. रिश्तों में हत्या का ऐसा ही प्रकरण बेंगलुरू में देखने को मिला, वहां एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की हत्या करके उसकी बॉडी को सूटकेस में भर दिया. इस तरह की घटनाओं के लगातार बढ़ने से दरअसल, देश के समाज शास्त्री चिंतित हैं. बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक साल 2023 में दुनिया भर में कुल 51 हजार 100 महिलाओं और लड़कियों का कत्ल हुआ है. इनमें से 60 प्रतिशत के करीब कत्ल महिलाओं या लड़कियों के अपने पार्टनर, पति या फैमिली मेंबर ने किए .एक रिपोर्ट कहती है कि देश भर में हर साल औसतन 225 लोगों को उनकी पत्नियां कत्ल कर देती हैं और लगभग 275 पत्नियां अपने पति के हाथों मारी जाती हैं.

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में हर ग्यारहवें मिनट में एक महिला या लड़की का कत्ल होता है. इनमें से औसतन हर रोज 140 महिलाओं या लड़कियों का कत्ल उनके घर के अंदर होता है. विश्व स्वास्थ्य संगठन और लंदन स्कूल ऑफ हाइजिन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड साउथ अफ्रीकन मेडिकल रिसर्च काउंसिल की रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2022 में दुनिया भर में कुल 48 हजार 800 महिलाओं और लड़कियों के कत्ल हुए थे और इनमें से भी 60 प्रतिशत से ज्यादा कत्ल पार्टनर, पति या फैमिली मेंबर ने ही किए थे. वर्ष 2022 में ऐसे अपराधों के मामलों में अफ्रीका पहले नंबर पर था और एशिया दूसरे नंबर पर ऐसे अपराधों में अब 2023 में एशिया पहले नंबर पर है और अफ्रीका दूसरे नंबर पर है. आंकड़ा कहता है कि पार्टनर पति या रिलेशनशिप में दुनिया भर में जितने कत्ल होते हैं, उसकी 58 प्रतिशत शिकार महिलाएं या लड़कियां होती हैं. लेकिन चौंकाने वाला आंकड़ा यह भी है कि इसी पार्टनर और रिलेशनशिप की वजह से 42 प्रतिशत पुरुषों का भी कत्ल होता है अर्थात यह अंतर ज्यादा नहीं है.

इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हर एक हजार पति में से 29 पति अपनी पत्नियों की हिंसा का शिकार होते हैं. जबकि एकल परिवार में यही आंकड़ा पत्नियों के लिए हर एक हजार में 32 है. वैसे पति पत्नी से जुड़े दर्ज कत्ल के मामलों के एक आंकड़े के मुताबिक 2022 में देशभर में पत्नी के हाथों पति के 220 कत्ल के मामले सामने आए थे. इसी दौरान पति के हाथों पत्नी के कत्ल के 270 से ज्यादा मामले सामने आए हैं. कुल मिलाकर जो कुछ हो रहा है वो बेहद चिंता जगाने वाला है. इस पर समाजशास्त्रियों ने गंभीर विचार कर कोई हल खोजना चाहिए.

सांस्कृतिक एकता के सूत्रधार आद्य शंकराचार्य

प्रो विवेकानंद तिवारी

स्वयं को विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला भारतवर्ष उस समय नाजुक दौर से गुजर रहा था. तत्कालीन समाज में धर्म और अध्यात्म के नाम पर अराजकता फैल रही थी. चार्वाक, लोकायत, कापालिक, शाक्त, सांख्य, बौद्ध, माध्यमिक तथा अन्य बहुत से सम्प्रदाय और उनकी शाखाएं बन गई थीं. इनमें कोई मेल न था. लगता था हर तीसरे व्यक्ति का अपना दर्शन, अपना सिद्धान्त और अपना अनुगामी दल है. आध्यात्मिक क्षेत्र में हुए ऐसे पतन के समय आचार्य शंकर का अवतरण हुआ. अध्यात्म की नींव दर्शनशास्त्र है.

आचार्य शंकर ने अद्वैत सिद्धांत को स्थापित किया. अपने अकाट्य प्रमाण, धारदार तर्क से नास्तिकों को परास्त किया. भाष्य लिखकर समाज को ज्ञान के भंडार से भर दिया.

विदेशियों ने ढलती हुई बौद्ध सत्ता का उन्नायक बनकर भारत में प्रवेश किया और बौद्धों ने बिना सोचे-समझे उनका सहयोग किया. लेकिन प्रखर राष्ट्रीयता का पोषक हिन्दू समाज इसे सहन न कर सका, जिसके चलते कुमारिल भट्ट द्वारा प्रज्ज्वलित चिंगारी शंकराचार्य के रूप में दावानल बनकर प्रगट हुई- जिसने सभी झाड़-झंखाड़ को भस्मीभूत कर दिया, जिसके चलते देश एवं धर्म की रक्षा हुई.

शंकराचार्य को हिन्दू, बौद्ध तथा जैन मत के लगभग 80 प्रधान सम्प्रदायों के साथ शास्त्रार्थ में प्रवृत्त होना पड़ा था. हिन्दू धर्मावलम्बी जन यथार्थ वैदिक धर्म से विच्युत होकर अनेक संकीर्ण मतवादों में विभक्त हो गए थे. आचार्य शंकर ने वेद की प्रामाणिकता की प्रतिष्ठा की और हिन्दू धर्म के सभी मतवादों का संस्कार कर जनसाधारण को वेदानुगामी बनाया.

शंकर इस तथ्य से भलीभांति अवगत थे कि वैदिक भारत में देव मंदिरों की बड़ी प्रतिष्ठा थी.

उस कालावधि में मंदिरों को राष्ट्र मंदिर का लघुरूप माना जाता था. तभी तो प्रत्येक देवता के हाथ में शस्त्र और शास्त्र दोनों ही दिए गए थे. इन देव मंदिरों में राजा, राजगुरु व मंदिर पुरोहितों के मध्य राष्ट्र निर्माण व समाज के उत्थान की विविध गतिविधियों की चर्चा होती थी और संस्कृति संरक्षण की योजनाएं बनती थीं. वैदिक भारत की राष्ट्र मंदिरों की इस अनूठी परिकल्पना से अभिप्रेरित होकर आचार्य शंकर ने देश में राष्ट्रीय भावना को मुखरित और जाग्रत करने के देश के चार कोनो में चार धामों की स्थापना की.

इन चार धामों की स्थापना के पीछे उनका मूल उद्देश्य राष्ट्र व संस्कृति बचाने का था. आचार्य शंकर द्वारा स्थापित ये चारों धाम राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ रखने में आज भी अप्रतिम योगदान कर रहे हैं. आचार्य शंकर सही मायने में अत्यंत दूरदर्शी राष्ट्र निर्माता थे. उनके द्वारा स्थापित भारत के चार धाम राष्ट्र की आध्यात्मिक ऊर्जा सघन तेजपुंज होने के साथ देश के सांस्कृतिक पुनरोत्थान के आधार स्तंभ भी माने जाते हैं. यही नहीं, उनकी इन स्थापनाओं को देश को विदेशी आक्रांताओं से बचाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम माना जाता है.

राष्ट्रकवि दिनकर के अनुसार सचमुच वह 'वंदेमातरम्' के पहले सृष्टा थे, जिन्होंने बंकिम चंद्र चटर्जी के लिए मार्ग प्रशस्त किया. वह वेदों के प्रकांड विद्वान थे और वैदिक संस्कृति को आधार बनाकर 'स्वराज्य' के तारों को पूरे देश में पूरकर अपने महान कार्य का संपादन कर रहे थे. वह महर्षि मनु, विदुर और चाणक्य की साक्षात मूर्ति थे जो राष्ट्र देव की आराधना के लिए कुशल शिल्पकार सिद्ध हुए. उन्होंने पथभ्रष्ट राजनीति व किंकर्त्तव्यविमूढ़ राजधर्म को सही दिशा दी थी. यह हमारा दुर्भाग्य था कि यह महामानव अधिक समय तक हमारे मध्य नहीं रह सका.

आचार्य शंकर के सिद्धांतों और प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप भारतवर्ष एक ओर तो रूढ़िवादी कर्मकाण्ड और दूसरी ओर नास्तिकतावादी जड़वाद के गर्त में गिरने से बच गया. आचार्य शंकर ने जिस तरह से भारतवर्ष का उद्धार किया, उनके इस एकत्व के सिद्धांत को अपने जीवन में लाकर भारतवर्ष को उन्नत और वैभवशाली बनायें.

वस्तुत: आचार्य शंकर देश को जोड़ने वाले सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और एकात्मता की साक्षात प्रतिमूर्ति थे. यह देश सदैव उनका ऋणी रहेगा.

दिल्ली डायरी

सर्वोच्च अदालत पर टिप्पणी से विवाद बढ़ा

प्रवेश कुमार मिश्र

सर्वोच्च न्यायालय की ओर से कानूनों पर समयसीमा तय करने और अनुच्छेद 142 के इस्तेमाल को लेकर भाजपा सांसद द्वारा की गई औपचारिक टिप्पणी पर वैचारिक मतभेद और राजनीतिक विवाद बढ़ गया है. सांसद ने कहा कि यदि कानून बनाना सर्वोच्च न्यायालय का काम है तो संसद भवन बंद कर देना चाहिए. इतना ही नहीं उपराष्ट्रपति द्वारा भी सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार पर सवाल उठाए जाने के बाद राजनेताओं व कानूनविदों के बीच वैचारिक मतभेद उजागर होने लगा है. उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों वक्फ संशोधन कानून और अन्य मामलों में कोर्ट के रूख पर सवाल उठाते हुए भाजपा के सांसदों ने जिस तरह से टिप्पणी की उसको लेकर वरिष्ठ कानूनविदों व कांग्रेस समेत विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा नेताओं पर निशाना साधा है. हालांकि भाजपा ने सांसदों के बयान से पल्ला झाड़ते हुए उनकी निजी राय बताते हुए मामले पर पानी डालने का प्रयास किया है. लेकिन अभी भी इस विषय पर विवाद चल रहा है.

विदेशी धरती पर राहुल गांधी के एक और बयान पर देश में बवाल

लोकसभा में नेताप्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पिछले दिनों विदेशी धरती पर चुनाव आयोग को केंद्र में रखकर जिस तरह से बयान दिया है उसको लेकर सियासी बवंडर खड़ा हो गया है. भाजपा ने जहां एक तरफ इस तरह के बयान को देश का अपमान बताकर राहुल गांधी पर निशाना साधा है वहीं दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी ने राहुल गांधी का बचाव करते हुए कहा कि राहुल ने महाराष्ट्र चुनाव में जो कुछ हुआ है उसकी सच्चाई बयां की है. हालांकि भाजपाई नेता कह रहे हैं कि पिछले कुछ वर्षों में राहुल गांधी द्वारा जिस तरह से विदेशी धरती पर विभिन्न सवालों के जवाब में कथित तौर पर संवैधानिक संस्थाओं पर एकतरफा टिप्पणी किया जाता रहा है उसे किसी स्तर पर देशहित में नहीं कहा जा सकता है.

ठाकरे परिवार के साथ-साथ पवार परिवार में भी हो रहा है एकजुटता की कोशिश

शिवसेना के संस्थापक बाला साहेब ठाकरे के पुत्र उद्धव ठाकरे व भतिजा राज ठाकरे के बीच चल रहे वर्षों पुरानी टकराव अब समाप्ति की ओर बढ़ रहा है. इसी तरह शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले और भतिजा अजित पवार के बीच चले रहे राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता अब समन्वय की ओर बढ़ रहा है. महाराष्ट्र की राजनीति में दबदबा रखने वाले उक्त दोनों परिवारों के बीच चल रहे आपसी सुलह की खबर दिल्ली की राजनीतिक गलियारों के लिए भी चर्चा का विषय बना हुआ है. कहा जा रहा है कि दोनों परिवारों के अलग हुए सदस्य राजनीतिक मजबूरी या व्यवहारिक समझ के कारण अब एक होकर अपनी खोई ताकत हासिल करने के प्रयास में हैं. इसलिए इस मेल पर राष्ट्रीय राजनीति की भी नजर लगी हुई है.

कांग्रेस में बंद होने जा रहा है गणेश परिक्रमा की चलन

कांग्रेस पार्टी जल्द ही अपनी सांगठनिक ढांचे को चुस्त-दुरुस्त करने के उद्देश्य से व्यक्ति विशेष या क्षेत्रीय क्षत्रपों की परिक्रमा जिसे राजनीतिक शब्दावली में गणेश परिक्रमा की संज्ञा दी जाती रही है उसे बंद करने जा रही है. वरिष्ठ नेताओं द्वारा अपने अपने चहेते नेताओं को व्यक्तिगत वचनबद्धता के कारण हमेशा से आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाता रहा था जिसपर स्थाई रूप से विराम लगाने की कवायद शुरू हो गई है. पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने विभिन्न मौकों पर इस प्रक्रिया को खत्म करने और बरात के घोड़े के बजाय युद्ध के घोड़े को मैदान में उतारने की बात कही जा रही है. हालांकि इस प्रक्रिया को समाप्त करना आसान नहीं है क्योंकि पार्टी के कुछ नेता दबी जुबान से कहने लगे हैं कि ऐसे नेताओं को कहां से लाया जाएगा जो किसी के पीछे घूमे बगैर अपनी पहचान और ताकत हासिल किया हो?

वक्फ विधेयक के समर्थन के कारण जदयू में उभरने लगे मतभेद

वक्फ संशोधन विधेयक पारित कराने में अहम भूमिका निभाने वाले जदयू सांसदों को अब अपनी भविष्य की चिंता सताने लगी है. इतना ही नहीं बिहार विधानसभा चुनाव के दहलीज पर खड़े सूबे के जदयू विधायक भी एक वर्ग के मतदाताओं की बढ़ती नाराजगी से परेशान हैं. चर्चा है कि जदयू के राष्ट्रीय नेताओं के बीच भी इस विषय को लेकर आरंभिक समय से मतांतर रहा है जिसके कारण संगठन के अंदर बवाल मचा हुआ है. कहा जा रहा है कि जदयू के रणनीतिकार इस राजनीतिक विरोध से बचने के लिए पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर खास वर्ग के मतदाताओं के बीच संदेश देने का प्रयास करेंगे.

ऐसा डॉक्टर क्या चीज, जिसमें नहीं तमीज

भारतीय संस्कृति बड़े-बूढ़ों का सम्मान करना सिखाती है. उनका आदर न करें, तो भी कम से कम उनके साथ तमीज से पेश आना चाहिए. कितनी हैरत की बात है कि मध्यप्रदेश के छतरपुर में एक डॉक्टर ने आपा खोकर 77 वर्षीय बुजुर्ग को थप्पड़ मार दिया और फिर उसे निर्दयता से घसीटते हुए अस्पताल परिसर की पुलिस चौकी ले गया. चिकित्सक के पेशे में धैर्य, दया और आत्मसंयम जरूरी है. डॉक्टर के मीठे शब्द और सद्व्यवहार का मरीज पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है. बिना किसी स्वार्थ या प्रलोभन के मरीजों का इलाज करने की शपथ डॉक्टरों को दिलाई जाती है. बुढ़ापे में कुछ लोग चिड़चिड़े हो जाते हैं और चाहते हैं कि उन पर जल्दी से ध्यान दिया जाए. ऐसे समय डॉक्टर भी यदि गुस्से में आ जाए, तो कैसे काम चलेगा? बुजुर्ग मरीज इलाज के लिए 30 किलोमीटर दूर से अपनी पत्नी के साथ आया था. हो सकता है कि वह भूख या थकावट से परेशान रहा होगा. उसने डॉक्टर से देर से आने का कारण पूछा. मरीज की शिकायत है कि डॉक्टर ने पर्ची फाड़ डाली. उसे लात-घूंसों से पीटा और पुलिस चौकी ले जाकर जमीन पर पटक दिया. डॉक्टर ने भी बुजुर्ग मरीज पर जबानी आरोप लगा दिए कि उसने लाइन में खड़ी महिला से विवाद किया और अस्पताल के अटेंडेंट से दुर्व्यवहार किया. चाहे जो भी हो, डॉक्टर को मानसिक संतुलन कायम रखते हुए अपने स्तर का ध्यान रखना चाहिए था. क्या उसे अपने नाना-दादा की उम्र के व्यक्ति पर हाथ चलाना चाहिए था? मरीज का ब्लडप्रेशर बढ़ सकता है, लेकिन डॉक्टर का खून क्यों इतना उबल गया वह भी एक लाचार बूढ़े पर? मरीज और डॉक्टर के संबंधों का आधार विश्वास होता है. मरीज इस भरोसे से आता है कि डॉक्टर अपने इलाज से उसे भला-चंगा कर देगा. डॉक्टर की दयालुता व सहानुभूतिपूर्ण रवैया जख्म पर मरहम के समान होता है. यदि 2 मिनट का समय देकर डॉक्टर मरीज का दुख-दर्द सुन ले, तो उसमें हर्ज क्या है? हर डॉक्टर से उम्मीद की जाती है कि वह अपने पवित्र पेशे की गरिमा बनाए रखेगा. लोग ईश्वर के बाद यदि किसी को मानते हैं, तो वह डॉक्टर ही है!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

1.39 करोड़ में पड़ा शाह का खाना दूसरे की थाली पर नजर न लगाना

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, सभ्यता और शालीनता का तकाजा है कि किसी की थाली पर नजर नहीं डालनी चाहिए. कोई सोने-चांदी के वर्क से लिपटी मिठाई खाए अथवा छप्पन भोग का आनंद ले, उधर झांकने की कोई जरूरत नहीं है. हिंदी में कहावत है-रूखी-सूखी खाय के ठंडा पानी पी, देख पराई चोपड़ी क्यों ललचाए जी! इसका अर्थ है कि रूखा-सूखा जो भी मिले, खाकर ठंडा पानी पी लो, लेकिन दूसरे की घी चुपड़ी हुई रोटी को देखकर लालच में मत पड़ो. हर कोई अपनी किस्मत से खाता है.

हमने कहा, आपको पता भी है कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की शाही थाली 1.39 करोड़ रुपए की पड़ी. इसे लेकर राकां (शरद पवार) के विधायक जितेंद्र आव्हाड और स्वाभिमानी शेतकरी संगठना के नेता राजू शेट्टी ने तीखी आलोचना की है. अब आप सोच में पड़ जाएंगे कि अमित शाह का भोजन इतना महंगा कैसे पड़ गया! हुआ यह कि रायगड़ किले पर छत्रपति शिवाजी महाराज की पुण्यतिथि कार्यक्रम के बाद अमित शाह, अजीत पवार गुट के

प्रदेशाध्यक्ष व सांसद सुनील तटकरे के आमंत्रण पर उनके यहां भोजन करने सुतारवाड़ी गए.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, इसमें गलत क्या है! किला चढ़ने के परिश्रम के बाद भूख लगना स्वाभाविक है. कोई प्रेम से खाने के लिए निमंत्रित करे, तो वहां अवश्य जाना चाहिए. भगवान कृष्ण ने विदुर के यहां जाकर भोजन किया था और सुदामा के पोहे खाए थे.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, अमित शाह के हेलीकाप्टर की लैंडिंग व टेक आफ के लिए सुतारवाड़ी में 1 करोड़ 39 लाख रुपए की लागत से हेलीपैड बनाया गया. इससे समझ जाइए कि यह भोजन कितना महंगा पड़ा. जितेंद्र आव्हाड ने कहा कि यदि शाह को इतनी भूख लगी थी, तो मैं खुद उनके लिए पेण से रायगड़ खाने का टिफिन लेकर आता. इससे खर्च बच जाता. राजू शेट्टी ने कहा कि सुनील तटकरे के घर एक कटोरी आम का रस और एक मोदक खाने पर 1.39 करोड़ रुपए खर्च किए गए. परभणी में 1.50 लाख के कर्ज की वजह से किसान ने आत्महत्या की. उसी रात उसकी पत्नी ने भी मौत को गले लगाया.

हमने कहा, %हर व्यक्ति का भाग्य एक-दूसरे से अलग होता है. किसे कहां खाना मिलना है, यह पहले से तय रहता है, इसीलिए कहा गया है- दाने-दाने पे लिखा है खानेवाले का नाम, खानेवाले अनेक देनेवाला एक राम !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11881 - डॉ. सागर खादीवाला

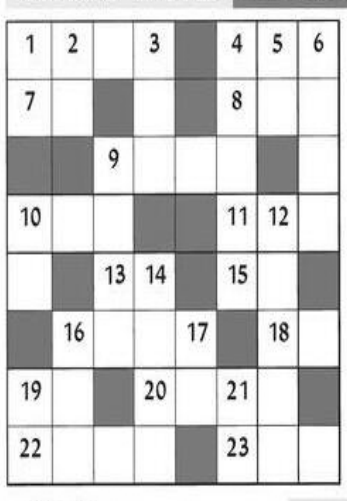

ऊपर से नीचे

1. सौ का समूह, सैकड़ा, शताब्दी (सं.) 2. मुसलमानों की पवित्र मक्का की तीर्थयात्रा 3. डाह करने वाला 4. पत्थर गढ़ने या काटनेवाला 5. गांव 6. लोकप्रिय 9. प्रलय 10. हिरनी, हरिणी 12. तंत्र-मंत्र द्वारा किसी को वश में करना 14. तिरछा, टेढ़ा 16. वायुयान चालक, जो उड़ता हो 17. नारी, नाल, गरदन 19. कत्था 21. छोटी खाट या बड़ी मचिया

यें से दायें

1.नफीरी, मुंह से फूंक कर बजाया जानेवाला एक बाजा. 4. लड़ाई, युद्ध (सं.) 7. प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि 8. जानेवाला, गंध (सं.) 9. दूषित, मलिन 10. शिकार, आखेट (सं.) 11. राजा, राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि 13. बुद्धि, समझ 15. चंद्रमा, चांद 16. ऊपर से नीचे आना, किसी जोड़ नस या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना 18. कार्य, काम 19. ठोस, दृढ़, कठिन 20. राजपूतों की जाति की एक प्रधान शाखा 22. शिथिलता, थकान 23. कौटिल्य

Solution 11880

म	द	न	गो	पा	ल	■	म
धु	र	■	ता	प	चा	ल	क
र	क	म	■	का	ना	■	ब
ता	ना	■	भा	र	■	आ	रा
■	■	नी	ल	क	म	ल	■
सं	त	ति	■	■	द	म	न
त	मा	शा	ई	■	हो	■	ज
■	शा	स्त्र	■	म	श	हू	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में सुधार होगा. पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. वर्ष के मध्य में मित्रों व भाईयों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा. लाभ होगा, पर नहीं के बराबर. वर्ष के अन्त में विवादित राजनीति का सामना करना पडेगा.विवाद के कारण तनाव हो सकता है. व्यापार में परिश्रम एवं व्यस्तता रहेगीं.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को समय व्यवसाय की दृष्टि से सुधार होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों के लिये मित्र व भाईयों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी.कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में परिश्रम एवं व्यस्तता रहेगी. आलस्य से छुटकारा मिलेगा. मकर और ऋंभ राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में सुखमय आनन्द रहेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को सुख का अनुभव होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में परिवर्तन का योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक निडर साहसी, महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, एवं व्यक्तित्ववान होगा, बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, अस्थिर बुद्धि का होने से उटपटांग बातें करेगा, विद्या प्रारंभ में कम एवं बाद में अच्छी होगी, मित्रों से धोखा खाने के बाद सीख मिलेगी, माता पिता का आदर करेगा.

मेष- स्वास्थ्य में सुधार होगा, साझेदारी में कोई बड़ी योजना बनेगी, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, आकस्मिक धन लाभ होगा, शुभ संदेश मिलेगा.

वृषभ- कानूनी मामलों में सावधानी से निर्णय लेने की जरूरत है, खोया आत्म विश्वास फिर से प्राप्त होगा, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा.

मिथुन- जोखिम के कार्यो में रूचि बढ़ेगी, समय पर वादा पूरा नहीं करने का मलाल रहेगा, बुद्धिमानी एवं सूझबझ से बिगड़ा काम बनेगा, व्यापार व्यवसाय अनुकूल रहेगा.

कर्क- बीती बातों को भूलकर निजी सम्बन्धों को सुधारें, सामाजिक जीवन में सम्मान मिलेगा, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा.

सिंह- सपने साकार करने का समय है, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, व्यर्थ के तनाव से बचें, पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान मिलेगा, निजी पुरूषार्थ से लाभ होगा,

कन्या- सहयोग से बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी, राजकीय मामले में पक्ष मजबूत होगा. यश मान-सम्मान मिलेगा, जीवन सुखद रहेगा.

तुला- सूझबूझ से आगे बढ़ें, सफलता मिलेगी, युवाओं को कैरियर में नये अवसर मिलेंगे, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग का सहयोग रहेगा.

वृश्चिक- कार्य स्थल पर सबकी जबावदेही तय करें, नई योजना की शुरूआत में परेशानी होगी, दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी, महिला की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी.

धनु- सुख में वृद्धि होगी, सोचसमझकर निवेश करें, दिनचर्या अनियमित रहेगी, मित्रता उपयोगी रहेगी, खानपान पर ध्यान दें, विवाद को टालना हितकर रहेगा.

मकर- सहूलियत के हिसाब से कार्य में बदलाव होगा, सोचे हुये कार्य में सफलता मिलेगी, आय से अधिक व्यय होगा, नौकरी के कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

कुम्भ- मित्रों के रूखे व्यवहार से खिन्नता होगी, वाणी पर संयम रखें. नौकरी के कार्यो में अधिकता रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

मीन- अपने पक्ष को आत्म विश्वास के साथ रखें, जमीन प्रापर्टी के कार्यो में सफलता मिलेगी, नये लोगों, के साथ सम्बन्धों में मधुरता, स्वास्थ्य कष्ट दूर होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

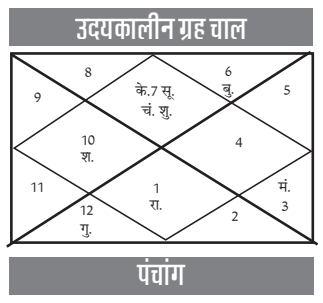

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2082 वैशाख कृष्ण दशमीं बुधवासरे दिन 11/32, धनिष्ठा नक्षत्रे दिन 7/24, शुक्ल योगे दिन 2/43, विष्टि करणे सू.उ. 5/36 सू.अ. 6/24, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण दशमीं को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में 30 से 40 रूपये की मंदी होगी, धान्यों के भाव में अस्थिरता रहेगी, रूई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, जूट, बारदाना, के भाव में मंदी होगी, भाग्यांक 3441 है.

SUDOKU 7013

			4		6			
					2	7		
	6	8				9		
5	3							6
				6				
7							9	2
		9				8	5	
		2	1					
			3		4			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7012

2	9	7	1	3	6	4	8	5
3	1	6	5	8	4	2	9	7
5	4	8	7	9	2	6	3	1
9	2	1	4	7	3	8	5	6
7	8	3	6	1	5	9	2	4
4	6	5	9	2	8	1	7	3
1	7	4	2	5	9	3	6	8
6	3	2	8	4	7	5	1	9
8	5	9	3	6	1	7	4	2